खण्ड – 5 : आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ

इकाई – 2 : शैलीविज्ञान

इकाई की रूपरेखा

5.2.00. उद्देश्य
5.2.01. प्रस्तावना
5.2.02. शैली और शैलीविज्ञान का अर्थ
  5.2.02.1. शैली का अर्थ
  5.2.02.2. वैयक्तिक शैली
  5.2.02.3. शैलीविज्ञान का अर्थ
5.2.03. शैलीविज्ञान का उद्भव और विकास
  5.2.03.1. 'रेटॅरिक' (वाग्मिता) और शैलीविज्ञान
  5.2.03.2. रूपवाद और शैलीविज्ञान
  5.2.03.3. भाषाविज्ञान और शैलीविज्ञान
  5.2.03.4. शैलीविज्ञान और साहित्य-समीक्षा
5.2.04. शैलीविज्ञान का लक्ष्य
5.2.05. शैलीविज्ञान के प्रकार्य
  5.2.05.1. विश्लेषण
  5.2.05.2. संश्लेषण
  5.2.05.3. निर्वचन
5.2.06. शैलीवैज्ञानिक युक्तियाँ और अभिव्यक्ति-माध्यम
5.2.07. शैलीविज्ञान की मुख्य अवधारणाएँ
  5.2.07.1. नॉर्म या प्रतिमान
  5.2.07.2. रजिस्टर या प्रयुक्ति
  5.2.07.3. 'फ़ोरग्राउंडिंग' या अग्रप्रस्तुति
  5.2.07.4. विचलन
  5.2.07.5. समान्तरता
5.2.08. पाठ का सारांश
5.2.09. उपयोगी सन्दर्भ
  5.2.09.1. हिन्दी की पुस्तकें
  5.2.09.2. अंग्रेज़ी पुस्तकें
5.2.10. अभ्यास के लिए प्रश्न

5.2.00. उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

5.2.00.1. शैली और शैलीविज्ञान का अर्थ समझ सकेंगे।

5.2.00.2. शैलीविज्ञान के उद्भव और विकास को जान पाएँगे।

5.2.00.3. शैलीविज्ञान की मुख्य अवधारणाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

5.2.00.4. शैलीविज्ञान के लक्ष्यों और प्रकार्यों जान पाएँगे।

5.2.01. प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम के खण्ड – 5 में 'आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियाँ' के अन्तर्गत पिछली इकाई में आप संरचनावाद के बारे में पढ़ चुके हैं। हम जान चुके हैं कि भाषा का वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सकता है और विशिष्ट उपकरणों के प्रयोग द्वारा उसकी साहित्यिक अर्थवत्ता का उद्घाटन भी किया जा सकता है। जिन पद्धतियों में कृति का विवेचन-मूल्यांकन रूप, संरचना, शैली आदि विशुद्ध भाषिक या साहित्यशास्त्रीय नियमों के आधार पर किया जाता है उनमें रूपवाद, संरचनावाद, विखण्डनवाद और शैलीविज्ञान प्रमुख हैं। प्रस्तुत इकाई में आप पाठ केन्द्रित समीक्षा-पद्धति – 'शैलीविज्ञान' के बारे में पढ़ेंगे। शैलीविज्ञान को भाषाविज्ञान का एक अंग या शाखा माना जाता है। भाषा के विभिन्न तत्त्वों को विशेष ढंग से रचना में प्रयुक्त करते हुए उसके अर्थ और महत्त्व को स्थापित करना शैलीविज्ञान का कार्य-क्षेत्र है। हम यहाँ विचार करेंगे कि शैली और शैलीविज्ञान का अर्थ क्या है और उसका रचना के मूल्यांकनमें क्या योगदान है।

5.2.02. शैली और शैलीविज्ञान का अर्थ

विश्व की भाषाओं और साहित्य पर कभी कम तो कभी ज़्यादा विचारों का प्रभाव हमेशा रहा है। विचारों पर अधिक बल दिए जाने के कारण कृति के आभ्यन्तर गुणों और विशेषताओं का विश्लेषण पूरी तरह नहीं हो पाता है। कृति के आन्तरिक पक्षों के विश्लेषण के आधार पर उसके मूल्यांकन की परम्परा भी बहुत पुरानी है। बीसवीं सदी में कृति के आन्तरिक पक्षों को भाषा और साहित्य के केन्द्र में लाने के लिए शैली शब्द सामने आया और इसके वैज्ञानिक अध्ययन के लिए शैलीविज्ञान का उदय हुआ। शैलीविज्ञान को समझने के लिए इसके शाब्दिक अर्थ और विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई विभिन्न परिभाषाओं का अवलोकन यहाँ उपयुक्त होगा।

5.2.02.1. शैली का अर्थ

शैली भाषा का प्रभावी प्रयोग है, चाहे वक्तव्य देना हो या भावनाओं को उभारना हो, सबसे पहले यह तथ्यों को स्पष्टता और संक्षिप्तता के साथ प्रकट करने की शक्ति है। शैली अंग्रेज़ी शब्द 'स्टाइल' का हिन्दी रूपान्तरण है। अंग्रेज़ी शब्द 'स्टाइल' की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द 'स्टिलस' से हुई है, जिसका अर्थ कलम होता है जिसे रोमन लोग मोम की पट्टिकाओं पर लिखने के लिए काम में लेते थे। समय के साथ इसके अनेक अर्थ निकलते गए जिसमें प्रत्येक अर्थ भाषा के विशेष तत्त्व और उसके बोलने के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है। भाषाविज्ञान

और साहित्य में इस शब्द का प्रयोग लेखक विशेष द्वारा अपनी रचना में पाठक को प्रभावित करने हेतु भाषा के तरीक़ों के लिए होता है। शैली विषय-प्रतिपादन की विशिष्ट तकनीक है, इसलिए विशिष्ट अर्थ की अभिव्यक्ति विशिष्ट शब्दावली, वाक्य-विन्यास, शब्दों के उतार-चढ़ाव, उच्चारण, पदक्रम और अंदाज़ में ही सम्भव है। शैली भाषा के चयन और उसे प्रयोग में लेने की व्यक्ति और विषय सापेक्ष प्रविधि है। शैली को अधिक व्यवस्थित ढंग से समझने के लिए आइए विद्वानों द्वारा दी गई शैली की कुछ परिभाषाओं पर विचार करें –

"शैली गहराई है।" – डर्बिशायर

"शैली विचलन है।" – एंक्विस्ट

"शैली ही व्यक्ति है।" – बुफ़ों

"शैली भाषा का एक गुण है जो लेखक विशेष के भावों और विचारों, अथवा भावों और विचारों की व्यवस्था का सम्प्रेषण करती है।" – मिडल्टन मरी

"शैली भाषा की अव्यक्त विशेषताओं का चयन है।" – ब्लूमफ़ील्ड

"शैली रूप या अभिव्यंजना का पर्याय है और इसलिए यह एक अनावश्यक शब्द है।" – क्रोचे

"शैली भाषिक सम्भावनाओं में व्यक्तिगत चयन और चयन के प्रतिरूपों की उपज है।" – चैटमैन

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में सामान्य बात यह है कि शैली विशेषताओं का एक समूह है जिसके आधार पर एक लेखक या वक्ता को दूसरे लेखक या वक्ता से या एक वर्ग के अन्तर्गत उपवर्ग या समुदाय को दूसरे उपवर्ग या समुदाय से अलग पहचाना जा सकता है। इन विशेषताओं की पहचान उस लेखक या वक्ता और उपवर्ग के भाषायी साधनों के विश्लेषण द्वारा की जा सकती है। देखा जा सकता है शैली का सम्बन्ध अभिव्यक्ति के रूप से है, उसकी अन्तर्वस्तु से नहीं। इसका अभिप्राय यह है कि लेखक या वक्ता अपने मन्तव्य को शैली की भिन्नता के आधार पर कितने प्रभावी ढंग से प्रकट कर पाता है।

संचार का एक महत्त्वपूर्ण साधन होने के कारण भाषा को व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझने की कोशिश की गई है। जब हम अपने दैनिक कार्यों और विशेष सामाजिक या व्यावसायिक कार्यों के सिलसिले में अन्य लोगों से वार्तालाप करते हैं, पत्राचार करते हैं तब हम जाने-अनजाने विचार और भाषा की कुछ तकनीकों और विधियों का प्रयोग करते हैं। हम अपने वाचिक और लिखित संचार में प्रभाव पैदा करने या अपने मंतव्यों को स्पष्ट करने के लिए अपनी एक ही बात को अलग-अलग ढंग से अभिव्यक्त करते हैं। यही शैली है – विषय का अर्थ स्पष्ट करने और उसे सम्प्रेषणीय बनाने के लिए भाषा का विविधरूपी प्रयोग।

5.2.02.2. वैयक्तिक शैली

आई.आर. गाल्पेरिन के अनुसार "वैयक्तिक शैली एक विशेष लेखक से सम्बन्धित भाषिक इकाइयों, अभिव्यक्ति-माध्यमों और शैलीवैज्ञानिक युक्तियों का विलक्षण सामंजस्य है, जो उस लेखक के कार्य को आसानी से पहचानने योग्य बना देता है।"

शब्दों की व्यवस्था का ऐसा ढंग जो लेखक के व्यक्तित्व तथा उसके विचारों और मंतव्यों कोसही प्रकार से अभिव्यक्त करे, उस लेखक की शैली कहलाती है। लेखक या वक्ता के विचारों को सर्वाधिक पूर्णता के साथ प्रकट करने वाली शैली सबसे अच्छी शैली मानी जाती है। शैली दो तत्त्वों के मेल से बनती है – अभिव्यक्त किए जाने वाले विचार और लेखक की विशिष्टता। शैली का व्यक्तित्व के साथ घनिष्ठ सम्बब्ध होता है। शैली से लेखक या वक्ता के व्यक्तित्व की पहचान भी हो जाती है, विशेष शैली से विशेष लेखक या वक्ता को जाना जाता है। श्रोता या पाठक किसी भी लिखित या मौखिक अभिव्यक्ति के वाक्य-विन्यास, शब्दों के उतार-चढ़ाव, उच्चारण, क्रम और अंदाज़ में कोई भी परिवर्तन करके उस अभिव्यक्ति का वास्तविक अर्थ ग्रहण नहीं कर सकता। अभिव्यक्ति में शब्द व्यवस्था को समझना ही पर्याप्त नहीं होता है, बल्कि लक्ष्यार्थ को ग्रहण करना ज़रूरी होता है। इस दृष्टि से, व्यक्तित्व की भिन्नता की तरह शैली में भी भिन्नता होती है; न दो व्यक्ति एक जैसे होते हैं और न दो शैलियाँ।

एक प्रतिभाशाली लेखक या कुशल वक्ता हमें अपने अनुभवों और अभिव्यक्तियों में सहभागी बना देता है। यह सह-अनुभव उसके द्वारा भाषायी साधनों के विशिष्ट प्रयोग से होता है और हमें इसका एहसास नहीं होता है कि वह आदतन या जानबूझकर इन साधनों का प्रयोग कर रहा है। अत: जिसे लेखक या वक्ता की व्यक्तिगत शैली कहा जाता है वह उस लेखक या वक्ता द्वारा प्रयुक्त भाषायी इकाइयों, अभिव्यक्ति के साधनों और शैलीगत उपकरणों का विलक्षण संयोजन है जो उसकी अभिव्यक्ति को दूसरों से अलग और विशिष्ट बनाता है। व्यक्तिगत शैली का पारम्परिक और समकालीन शैली से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। व्यक्तिगत शैली पहले से प्रचलित और मान्यताप्राप्त मानकों से उचित विचलन की छूट लेती है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रक्रिया में स्थिर मानकों का सही और पूर्ण ज्ञान अनिवार्य है। चयन या भाषा का साभिप्राय प्रयोग तथा चुने गए तत्त्वों के प्रयोग का ढंग वैयक्तिक शैली के मुख्य गुण हैं।

5.2.02.3. शैलीविज्ञान का अर्थ

रिफ़ातेर के अनुसार "शैलीविज्ञान संदेश के प्रभावों, संचार-क्रिया का परिणाम और इसके ध्यानाकर्षण प्रकार्य का भाषाविज्ञान है।"

किसी साहित्यिक विधा या लेखक-विशेष की रचनाओं की शैलीगत विशेषताओं का अध्ययन शैलीविज्ञान है। साहित्यिक भाषा का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण 'शैलीविज्ञान' है। शैलीविज्ञान भाषा के किसी भी रूप के विभिन्न तत्त्वों का अध्ययन है, साहित्य की इसमें कोई विशेष भूमिका नहीं है। शैलीविज्ञान को भाषाविज्ञान

की एक शाखा के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें भाषा की शैली का व्यवस्थित विश्लेषण किया जाता है और यह देखा जाता है कि साहित्यिक रचनाओं की विधा, परिवेश और रचनाकर के अनुसार इसमें क्या परिवर्तन घटित होते हैं ? शैली के विश्लेषण का अर्थ कृति की रूपात्मक विशेषताओं का व्यवस्थित अध्ययन करते हुए उस कृति के मूल्यांकनमें इन विशेषताओं की सार्थकता निर्धारित करना है।

शैलीविज्ञान के प्रति अलग-अलग परिप्रेक्ष्य के कारण इसकी परिभाषाएँ भी भिन्न-भिन्न ढंग से की गई है। शैली को व्यक्तिगत अभिव्यक्ति का प्रकार, बोलने-लिखने का अलग ढंग या सामान्य ढंग से व्यतिक्रम आदि अनेक तरह से इसे परिभाषित करने के प्रयास हुए हैं। रोमन याकॉब्सन और इल्या रोमनोविच गाल्पेरिन जैसे अनेक विद्वान शैलीविज्ञान को अलग अनुशासन न मानकर उसे भाषाविज्ञान की एक शाखा मानते हैं। याकॉब्सन प्रस्ताव करता है कि सम्पूर्ण साहित्यशास्त्र को इसके अन्तर्गत माना जाना चाहिए – "भाषाविज्ञान शाब्दिक संरचना का सार्वभौमिक विज्ञान है। अत: साहित्यालोचन तक को इसका अंग कहा जा सकता है।" कई विद्वान शैलीविज्ञान को भाषाविज्ञान का अंग या शाखा न मानकर एक स्वतंत्र अनुशासन मानते हैं। इस्त्वान उलमान के शब्दों में "ये सब शैली के कुछ विशिष्ट तत्त्वों का अस्तित्व मानते हैं और उसे भाषा से अलग करते हैं। शैलीविज्ञान भाषाविज्ञान का एक प्रकार या उसकी शाखा मात्र नहीं है, बल्कि एक समानान्तर अनुशासन है जो अपने दृष्टिकोण से उन्हीं तथ्यों का अनुसंधान करता है।'

शैलीविज्ञान के अध्ययन में साहित्यिक रचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करने के कारण इसे कुछ वैकल्पिक नाम भी दिए हैं, जैसे साहित्यिक भाषाविज्ञान, आलोचनात्मक भाषाविज्ञान, साहित्यिक अर्थविज्ञान और साहित्यिक व्यावहारवाद आदि। इन नए-नए नामकरणों का अन्तर्निहित अर्थ शैलीविज्ञान के सभी प्रकार्यों को एक उचित नाम देना तथा यह दिखाना कि शैलीविज्ञान केवल भाषाविज्ञान के रूपकात्मक तत्त्वों के उद्घाटन का अनुशासन नहीं है।

शैलीविज्ञान साहित्यिक रचनाओं के विवेचन में भाषा विज्ञान की वैज्ञानिक खोजों और विधियों का प्रयोग करता है। भाषाविज्ञान का अर्थ भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है।

5.2.03. शैलीविज्ञान का उद्भव और विकास

शैलीविज्ञान का विकास बीसवीं सदी में हुआ। शैली शब्द का इतिहास इससे बहुत पुराना है; इसका प्रयोग प्राचीन काव्यशास्त्र में अनेक सन्दर्भों में हुआ है। शैलीविज्ञान का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि साहित्य की तकनीकी विशेषताओं, जैसे वाक्य-गठन, रूप-रचना आदि का उसके अर्थ पर क्या प्रभाव पड़ता है, अर्थात् तकनीकी रूप में परिवर्तन होने से साहित्य का अर्थ और प्रभाव किस तरह परिवर्तित होते हैं।

शैलीविज्ञान का उद्भव संरचनावाद के उद्भव से अधिक विविधतापूर्ण रहा है। शैलीविज्ञान का अर्थ किसी सैद्धान्तिकी के स्थान पर अध्ययन के एक क्षेत्र का संकेत करता है। सॉस्सुर का 'द्विविभाजन', ब्लूम्सफील्ड का 'वर्गीकरण' और चोम्स्की का 'रूपान्तरण' आदि अनेक प्रविधियों का प्रयोग साहित्यिक रचना के विश्लेषण के

लिए किया जाता है। यूरोप का भाषाशास्त्रीय शैलीविज्ञान लियो स्पिट्ज़र और एरिक ऑवेर्बाख़ के कार्यों में विकसित हुआ है। अमेरिकी शैलीविज्ञान एक प्रकार से अलग-अलग शैलियों का संकलन है, जिसमें सैम्युअल आर.लेविन, सीमूर चैटमैन, माइकल रिफ़ातेर और आन बानफ़ील्ड का योगदान है। इस धारा पर याकॉब्सन के भाषाविज्ञान का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। ब्रिटेन के शैलीविज्ञान में माइकल हैलिडे के संरचनात्मक व्याकरण और प्रकार्यवाद का प्रभाव बहुत गहरा है। उसके 'लिंग्विस्टिक फंक्शन' की इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। स्पीच एक्ट थियरी (वाक्-क्रिया या वाग्व्यापार सिद्धान्त) जैसे भाषा विज्ञान पर आधारिक दार्शनिक चिन्तन में भी साहित्यिक रचनाओं के विश्लेषण के सूत्र दिए गए हैं। साहित्यिक रचना के किसी भी भाषिक तत्त्व (जैसे वाक्य-विन्यास, स्वर, स्वनिम, शब्दावली आदि) का अध्ययन शैलीविज्ञान के अन्तर्गत आता है। छन्दशास्त्र एक ऐसा क्षेत्र है जो शैलीविज्ञान और भाषाविज्ञान की सन्धिरेखा पर स्थित है।

चार्ल्स बैली की पुस्तक 'त्रेते द स्तिलिस्तिक फ्रॉन्से' (1909) में सॉस्सुर के भाषाविज्ञान की कड़ी के रूप में शैलीविज्ञान का प्रस्ताव किया गया। बैली के अनुसार सॉस्सुर का भाषाविज्ञान व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों की पूरी व्याख्या नहीं कर सकता। बैली का प्रस्ताव प्राग लिंग्विस्टिक स्कूल के उद्देश्य से मिलता है। रूसी रूपवाद की अवधारणाओं का विकास करते हुए प्राग स्कूल ने 'फ़ोरग्राउंडिंग' की अवधारणा का निर्माण किया जिसके अन्तर्गत यह माना जाता है कि काव्य-भाषा साधारण भाषा से अलग पृष्ठभूमि की भाषा होती है, समान्तरता या विचलन के माध्यम से। यह पृष्ठभूमि की भाषा स्थिर नहीं होती है और साहित्यिक और ग़ैर-साहित्यिक भाषा के सम्बन्ध बदलती रहती है।

शैलीविज्ञान एक व्यापक शब्द है जिसका अलग-अलग भाषा-वैज्ञानिकों ने अलग-अलग अर्थ किया है। सामान्य रूप में यह कहा जा सकता है कि यह शैली का अध्ययन है। चार्ल्स बैली ने शैली को भाषा के संरचनात्मक आधार पर समझाते हुए सामान्य भाषाविज्ञान की एक अलग शाखा का प्रस्ताव किया जिसे बाद में 'लिंग्वो-स्टाइलिस्टिक्स' कहा गया।

5.2.03.1. 'रेटॅरिक' (वाग्मिता) और शैलीविज्ञान

शैलीविज्ञान प्राचीन अनुशासन 'रेटॅरिक' (वाग्मिता) का आधुनिक रूप है। 'रेटॅरिक' या 'वाग्मिता' लोगों को अपने लिखित या वाचिक संचार को प्रभावी और सम्प्रेषणीय बनाने की विद्या थी। इसमें सिखाया जाता था कि अपनी भाषा में किन युक्तियों और व्याकरणिक कोटियों का विशेष ढंग से प्रयोग करने पर भाषा के स्वरूप में सार्थक परिवर्तन आता है और वह अधिक प्रभावशाली बनती है। पश्चिमी दुनिया में 'रेटॅरिक' का प्रशिक्षण लोगों के सामाजिक व्यवहार की दृष्टि से उनकी अभिव्यक्ति को सशक्त बनाने का महत्त्वपूर्ण माध्यम रहा है। लेकिन कालान्तर में यह विद्या अपने मूल लक्ष्य से भटक कर भाषा और वाणी के सतही तत्त्वों के विश्लेषण तक सिमट गई, जिससे इसमें यांत्रिकता आ गई।

उन्नीसवीं सदी में 'रेटॅरिक' धीरे-धीरे भाषाविज्ञान का अंग बनकर उसमें समाहित हो गया। उन्नीसवीं सदी तक भाषा विज्ञान वस्तुत: 'भाषाशास्त्र' था, जिसके अन्तर्गत भाषा के उद्भव और विभिन्न भाषाओं के विकास तथा उनके पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता था। इस ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अलग हटकर बीसवीं सदी के प्रारम्भ में भाषा को एक संरचना की तरह देखने की प्रवृत्ति का प्रादुर्भाव हुआ, पारम्परिक विद्या 'रेटॅरिक' नए अवतार में प्रकट हुई। 'रूसी रूपवाद' इसका नया ठिकाना था।

5.2.03.2. रूपवाद और शैलीविज्ञान

शैलीविज्ञान की जड़ें रूपवादी 'प्राग लिंग्विस्टिक सर्कल' और इसके मुख्य चिन्तक रोमन याकॉब्सन के कार्यों में फलित भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन 'भाषाविज्ञान' में हैं। रूपवादी आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य साहित्यिक भाषा के तत्त्वों और विशेषताओं को अलग करना तथा यह देखना था कि 'विपरिचयकरण' की अवधारणा कला और साहित्य में कृति-विशेष के सौन्दर्यात्मक मूल्य के निर्धारण में कितनी महत्त्वपूर्ण है। भाषा-वैज्ञानिक रोमन याकॉब्सन मॉस्को छोड़कर प्राग के रास्ते अमेरिका आ गया और यहाँ के विद्वानों के साथ मिलकर भाषाविज्ञान के नए अनुसंधान में लग गया। याकॉब्सन और अन्य विद्वानों ने मिलकर 1958 में अमेरिका के इंडियाना विश्वविद्यालय में एक कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जिसका विषय था – 'कॉन्फ्रेंस ऑन स्टाइल'। इस कॉन्फ्रेंस की कार्यवाही का प्रकाशन 'स्टाइल इन लैंग्वेज़' शीर्षक से 1960 में हुआ। इसका सारांश यह था कि भाषा और साहित्य का वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ ढंग से अध्ययन करना 'भाषा विज्ञान' का विषय-क्षेत्र है। अपने समापन उद्बोधन में याकॉब्सन ने घोषणा की कि "काव्यशास्त्र शाब्दिक संरचना की समस्याओं को हल करता है और चूँकि भाषा-विज्ञान शाब्दिक संरचना का विश्व-विज्ञान है, अत: काव्यशास्त्र को भाषा-विज्ञान का अभिन्न अंग माना जाना चाहिए।" इस घोषणा और 'स्टाइल इन लैंग्वेज़' पुस्तक से भाषा और साहित्य के विद्वानों में गहन वाद-विवाद शुरू हो गया जिसने भाषा और साहित्य के मध्य दूरियाँ पैदा कर दी। साहित्य के वस्तुनिष्ठ विवेचन के दावे बढ़ते गए जिनकी परिणति 'नव-शैलीविज्ञान, और 'नव-संरचनावाद' जैसे नए रुझानों के रूप में हुई।

5.2.03.3. भाषाविज्ञान और शैलीविज्ञान

संरचनावाद के अध्ययन में हमने देखा है कि भाषा की संरचना के आधार पर साहित्यिक कृति को समझा जाता है। वहाँ भाषा को ही साहित्य माना गया है। एक अन्य क्षेत्र जिसमें भाषाविज्ञान के सिद्धान्तों का प्रयोग करके रचना का अध्ययन किया जाता है, वह है 'शैलीविज्ञान'। भाषाविज्ञान के एक अंग के रूप में शैलीविज्ञान इस बात पर बल देता है कि साहित्य भाषा से ही बनता है, इसलिए वह भाषाविज्ञान के सिद्धान्तों को आदर्शात्मक प्रारूप की तरह लागू नहीं करता, बल्कि भाषा-संरचना की विशेषताओं के आधार पर उसके सिद्धान्तों का प्रयोग करता है। सैद्धान्तिक तौर पर शैली-वैज्ञानिक विश्लेषण में भाषिक तथ्यों की ज़रूरत नहीं होती, क्योंकि इसके तथ्य उस कृति में ही उपलब्ध होते हैं जिसका विश्लेषण किया जाता है। यहाँ भाषाविज्ञान से केवल विश्लेषण की विधियाँ ली जाती हैं। इसके विपरीत, आलोचक भाषा-विज्ञान के सूत्रों के आधार पर कृति का विश्लेषण नहीं

करके साहित्य-समीक्षा की अन्य अवधारणाओं का आधार ले सकता है, लेकिन उसकी भाषा का विश्लेषण करने में भाषाविज्ञान की अवधारणाओं और उपकरणों का प्रयोग कर सकता है। व्यावहारिक रूप से इन दोनों तरीकों को अलग-अलग करना इतना आसान नहीं होता है, इसलिए इन दोनों तरीकों का समन्वित प्रयोग होता है।

भाषाविज्ञान सॉस्सुर के समय से लेकर अब तक अनेक परिवर्तनों से गुज़रा है। सॉस्सुर की समस्या कि एक भाषा-वैज्ञानिक अपने अध्ययन-विषय को कैसे परिभाषित करे, अभी बनी हुई है। समाजशास्त्र, तंत्रिकाविज्ञान और साइबरनेटिक्स में नए-नए रूपों में भाषाविज्ञान का प्रयोग और अनुसंधान हो रहे हैं, लेकिन पहले से विद्यमान अनेक छोटे-छोटे और जटिल संरचनात्मक तत्त्व अधिक समस्याग्रस्त होते जा रहे हैं। स्वयं संरचनावाद में भाषाविज्ञान, साहित्य-समीक्षा और दूसरे अनुशासनों के सामाजिक स्वरूप के प्रति नया रुख़ अपनाया जा रहा है। इन परिवर्तनों ने भाषाविज्ञान और साहित्यिक अध्ययन के सम्बन्धों में भी परिवर्तन पैदा कर दिया है। जैसे-जैसे साहित्यिक विधियों, साहित्यिक विश्लेषण और साहित्यिक मानदण्डों का वैज्ञानिक महत्त्व कम होता जा रहा है, वैसे ही वैज्ञानिक प्रारूप के प्रति जागरूकता बढ़ रही है तथा उसकी सीमाओं और अन्तर्विरोधों को पहचानने की दिशा में सक्रियता बढ़ रही है।

5.2.03.4. शैलीविज्ञान और साहित्य-समीक्षा

प्राय: देखा गया है कि केवल भाषा-वैज्ञानिक उपादानों के प्रयोग से साहित्यिक रचना के मूल्यांकन का कार्य साहित्य में रुचि रखने वाले भाषा-वैज्ञानिक ही करते हैं, साहित्य के आलोचक इनका प्रयोग बहुत कम करते हैं। इसलिए शैली-वैज्ञानिक और साहित्य-समीक्षक दोनों का लक्ष्य भी अलग-अलग है। शैली-वैज्ञानिक अध्ययन का लक्ष्य भाषा की प्रविधियों को समझना या किसी भाषिक सिद्धान्त की प्रामाणिकता के उदाहरण प्रस्तुत करना, या फिर भाषा शिक्षण के ऐसे सिद्धान्तों की खोज करना होता है जिनका प्रयोग किसी साहित्यिक रचना में हुआ है। शैलीवैज्ञानिक अध्ययन एक लक्ष्य वस्तुनिष्ठ ढंग से किसी साहित्यिक कृति के पाठ में ऐसे तत्त्वों की पहचान करना है जो उस कृति के महत्त्व के बारे में निर्णय करने में सहायक हो सके। यद्यपि इन प्रयासों से कृति के विश्लेषण और मूल्यांकन का कार्य पूरा नहीं हो सकता, क्योंकि रचना के मूल्यांकन का कार्य सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के साथ इतनी मज़बूती से जुड़ा हुआ होता है कि इन भाषा-वैज्ञानिक निष्कर्षों से उसका समग्र मूल्यांकन प्रभावित नहीं होता है। निपट भाषिक-मानों पर आधारित कृति-निर्णय कला के यांत्रिक उत्पादन की राह ही आसान करता है, साहित्य की गुणवत्ता का विकास नहीं करता है।

व्यापक रूप से सामाजिक सन्दर्भों और परिवेशगत पहलुओं पर विचार न करते हुए शैलीविज्ञान एक तरफ़ संरचनावाद की तरह उन वर्णनात्मक उपकरणों से साहित्यिक रचना का विश्लेषण करता है, वहीं दूसरी तरफ़ यह सामाजिक-भाषिकी जैसे व्यावहारिक अनुशासनों की मान्यताओं को भी महत्त्व देता है। शैलीविज्ञान दूसरे अनुशासनों जैसे साहित्यिक अध्ययन, मनोविज्ञान तथा भाषाविज्ञान की कई विधियों का संगम है। वह अपने विशेष सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने की अपेक्षा प्राय: इन अनुशासनों के सिद्धान्तों और मॉडल को ही अपने अध्ययन के लिए काम में लेता है। इसमें उसका मुख्य ध्यान उस संचारप्रक्रिया पर रहता है जो कृति को विचार के

केन्द्र में लाती है। अपने विवेचन में कृति-बाह्य मानकों और सन्दर्भों को विचारणीय न बनाते हुए भी उसका ध्यान लेखक और रचना, पाठक और रचना तथा उस परिवेश पर भी रहता है जिसमें कृति की रचना होती है और उसे ग्रहण किया जाता है अर्थात् पढ़ा और समझा जाता है।

शैली-वैज्ञानिक विश्लेषण के अन्तर्गत ठोस तथ्यों के आधार पर कृति का वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया जाता है। व्यावहारिक भाषाविज्ञान की एक शाखा के रूप में शैलीविज्ञान कृति का अध्ययन और व्याख्या उसकी भाषिक संरचना और ध्वनि संकेतों के आधार पर करता है। एक अध्ययन-विधि के रूप में यह भाषा विज्ञान और साहित्यिक आलोचना के समन्वय का कार्य करती है। शैलीविज्ञान के क्षेत्र में अधुनातन खोजों तथा आलोचनात्मक शैलीविज्ञान, बहुरूपात्मक शैलीविज्ञान और मध्यस्थ शैलीविज्ञान ने यह स्पष्ट कर दिया है कि ग़ैर-साहित्यिक रचनाएँ भी शैली-वैज्ञानिक के लिए उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी कि साहित्यिक रचनाएँ। एक अवधारणात्मक अनुशासन के तौर पर शैलीविज्ञान ऐसे नियमों की स्थापना करता है जिनके आधार पर व्यक्तियों और सामाजिक समूहों और समुदायों द्वारा भाषा-विशेष के प्रयोग को समझा जा सकता है। ये नियम साहित्यिक रचना, साहित्यिक विधाओं, लोक कलाओं, बोलियों तथा आख्यानों के विश्लेषण और साहित्यिक आलोचना जैसे अनेक क्षेत्रों में लागू किए जा सकते हैं।

5.2.04. शैलीविज्ञान का लक्ष्य

शैलीविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य भाषा विज्ञान के उपकरणों के माध्यम से कृति के पाठ के प्रभाव का विवेचन करना है। साहित्यिक आलोचकों के पास चूँकि वह शब्दावली नहीं होती और न ही उनकी वैसी इच्छा होती है जिससे कि वे कृति की वैज्ञानिक व्याख्या कर सकें। उनका ध्यान मुख्य रूप से ऐसे साहित्येतर कारकों पर रहता है जो कृति की भाषा से सम्बन्धित नहीं होते हैं। साहित्य-समीक्षकों द्वारा पारम्परिक 'रेटॅरिक' के माध्यम से भाषा का विश्लेषण करने के प्रयास किए जाते हैं लेकिन समकालीन रचनाओं के विश्लेषण में 'रेटॅरिक' एक अप्रासंगिक और अनुपयुक्त उपकरण सिद्ध हुआ है। भाषाविज्ञान और मनोविज्ञान के अनुसन्धानों ने ऐसी कई विधियाँ विकसित की हैं जिनके आधार पर कृति की भाषिक संरचना का बहुत गहराई से अध्ययन-विश्लेषण किया जा सकता है। शैलीविज्ञान इन सभी विधियों का उपयोग करते हुए कृति की अनेक साहित्यिक विशेषताओं, जैसे कविता के संगीत और आधुनिक कथा-साहित्य में आख्यानों की जटिलताओं आदि, की व्याख्या करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

शैलीविज्ञान साहित्य के विश्लेषण तक ही सीमित नहीं है। इसे सामान्य गद्य, पत्रकारिता, राजनीतिक भाषणों, धार्मिक प्रवचनों और विज्ञापन आदि अनेक वाचिक और लिखित अभिव्यक्तियों के विवेचन के लिए प्रयोग में लिया जाता है। शैलीविज्ञान का लक्ष्य साहित्यिक कृतियों में प्रयुक्त विशेष भाषा का विश्लेषण नहीं है, बल्कि भाषा के किसी भी रूप की तकनीकी विशेषताओं का अनुसंधान इसका लक्ष्य है।

शैलीविज्ञान का मुख्य सिद्धान्त या नियम यह है कि भाषा का अर्थ रचनाकर द्वारा जाने-अनजाने प्रयुक्त भाषायी विविधताओं से प्रकट होता है। शैलीविज्ञान ने ऐसी विश्वासोद्पादक प्रविधियों का एक विस्तृत भाषिक तंत्र विकसित किया है, जो पारम्परिक 'रेटॅरिक' की तुलना में अधिक वैज्ञानिक और सटीक है। शैलीविज्ञान के इस उपयोग से आलोचक रचना के इस विश्वासोत्पादक गुण को पहचाने में सफल हुए हैं। कृति के इन विश्वासोत्पादक गुणों की खोज के बाद शैलीविज्ञान में भाषा के अधिक सूक्ष्म और दक्ष उपयोग हेतु भाषा की अन्तर्निहित सम्भावनाओं का मार्ग खुला है। 'क्रिटिकल डिसकोर्स अनैलिसिस" शैलीविज्ञान की प्रविधियों पर आधारित ऐसा ही एक नया क्षेत्र है।

5.2.05. शैलीविज्ञान के प्रकार्य

शैलीविज्ञान के मुख्य रूप से दो अन्तर्निर्भर प्रकार्य हैं। पहला, यह विशेष भाषा-माध्यम के विभिन्न उपकरणों और उनके उन सत्तामूलक तत्त्वों की खोज करता है जो उक्ति या कथन के वाँछित प्रभाव को सुनिश्चित करते हैं। और दूसरा, यह उन विशेष पाठों (कृतियों) और वाग्व्यापारों का अनुसंधान करता है जो भाषा के चयन और व्यवस्था के कारण भाषा-संचार के अन्य माध्यमों से अलग होते हैं। शैलीविज्ञान के ये दोनों प्रकार्य अनुसंधान के दो अलग क्षेत्रों के रूप में पहचाने जा सकते हैं। भाषा-माध्यम के उपकरणों का विश्लेषण और उनके सत्तामूलक तत्त्वों का उद्घाटन तभी किया जा सकता है जब उन्हें ऐसी व्यवस्था में रखकर देखा जाए जिससे माध्यमों का सह-सम्बन्ध स्पष्ट होता हो। कृतियों का विश्लेषण तभी सम्भव है जब उनके भाषिक अवयवों को उनकी अन्त:क्रिया में प्रस्तुत किया जाए ताकि कृति विशेष की संरचना की अटूट एकता और स्पष्टता प्रकट हो जाए।

शैलीविज्ञान साहित्य का भाषिक अध्ययन करता है। वह लेखक विशेष की भाषा-प्रकृति और लेखन-शैली का अध्ययन करता है। वह हमें लेखक के उस मन्तव्य को समझने में सहायता करता है जिस मन्तव्य से लेखक ने पाठ या संदेश रचा है। शैलीविज्ञान उस प्रकार्य की सार्थकता में भी अपना ध्यान लगाता है जो चुनी हुई शैली से पूरा होता है। शैलीविज्ञान कृति के सौन्दर्य और रूप का वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए उसमें अन्तर्निहित अर्थ का उद्घाटन करता है। इस दृष्टि से इसके तीन महत्त्वपूर्ण प्रकार्य माने गए हैं – विश्लेषण, संश्लेषण और निर्वचन।

5.2.05.1. विश्लेषण

कृति के विभिन्न तत्त्वों या घटकों पर अलग-अलग विचार करते हुए उसके अर्थ और महत्त्व को प्रकट करने की प्रक्रिया विश्लेषण कहलाती है। इसमें यह देखा जाता है कि वाक्य-संरचना और शब्द-चयन की दृष्टि से पाठ में क्या महत्त्वपूर्ण है जो उसके अर्थ को विशिष्ट बनाता है। रचना की भाषिक संरचना और उसके विविध स्तरों के अनुसंधान से ही उसके सभी सम्भाव्य अर्थ सामने आते हैं।

5.2.05.2. संश्लेषण

कृति के विभिन्न तत्त्वों के विश्लेषण के बाद उन तत्त्वों के समन्वित रूप का अध्ययन भी अर्थ निर्धारण की दृष्टि से शैलीविज्ञान का मुख्य प्रकार्य है। विश्लेषण की प्रक्रिया में उपलब्ध कृति के अर्थ के साथ भाषिक इकाइयों और सम्पूर्ण कृति में अन्विति के आधार पर कृति के अर्थ को सभी आयामों में उद्घाटित किया जाता है। कृति के विविध तत्त्वों और अंगों को सुसम्बन्ध रूप में विश्लेषित किया जाता है और उसके सम्बन्ध में मूल्य-निर्णय दिया जाता है।

5.2.05.3. निर्वचन

निर्वचन (interpretation) शैलीविज्ञान का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण प्रकार्य है। इसके अन्तर्गत शब्दों के मुख्य और गौण अर्थ की खोज, वाक्य-रचना की प्रकृति तथा अन्य संरचनात्मक तत्त्वों के पारस्परिक सम्बन्धों की पहचान करके कृति का अर्थ-विश्लेषण किया जाता है। यह कृति के बाह्य रूप के विश्लेषण से चलकर उसके आन्तरिक रूप तक पहुँचने और उसका वास्तविक अर्थ ग्रहण करने और उसके मर्म को उद्घाटित करने का कार्य है।

शैलीविज्ञान का सार और उपयोगिता यह है कि यह कृति के पाठ और उक्तियों की हमारी तात्कालिक समझ को बढ़ाता है जिससे हम उन्हें सही अर्थों में समझें और उनका आनन्द प्राप्त करें। शैली की अवधारणा और भाषा में शैलीगत भिन्नताएँ इस विचार पर आधारित हैं कि भाषा की व्यवस्था में विषय को एक से अधिक भाषिक रूपों में प्रकट किया जा सकता है। शैली को भाषिक माध्यमों के विकल्प, भाषा के प्रयोग के मानकों से विचलन तथा भाषिक रूपों की बारम्बारता और तुलना माना जा सकता है। शैलीविज्ञान भाषिक विविधता और शैली के व्यापक क्षेत्रों से सम्बन्ध रखता है जिनसे विभिन्न पाठों – लिखित और मौखिक, एकालाप या संवाद, औपचारिक या अनौपचारिक, वैज्ञानिक या धार्मिक आदि की रचना सम्भव होती है।

5.2.06. शैलीवैज्ञानिक युक्तियाँ और अभिव्यक्ति-माध्यम

वैयक्तिक शैली में सामान्य और विशेष दोनों तत्त्व शामिल होते हैं। यदि हम लेखक के चयन को पहचान कर उसका मूल्यांकन करें तो हम उसकी शैली केतत्त्वों को स्पष्ट कर सकते हैं तथा उसकी शैली की विशिष्टता बता सकते हैं। भाषा-वैज्ञानिक भाषायी साधनों की उन सम्भावनाओं को भी सामने ला सकता है जो अब तक अव्यक्त रहीं या कभी-कभी व्यक्त हुईं। एक लेखक की वैयक्तिकता शब्दों, वाक्यों और शैली के चयन में ही नहीं, बल्कि भाषायी साधनों के विशिष्ट प्रयोग में भी प्रकट होती है। भाषा के अभिव्यक्ति-माध्यम स्वनिमी, रूपगत, शाब्दिक, वाक्य-रचना और मुहावरों आदि से सम्बन्धित विभिन्न रूप होते हैं जो उक्ति के भावनात्मक और तार्किक रूप से सघन बनाने के लिए भाषा में उपस्थित होते हैं। ये भाषा के ठोस तत्त्व होते हैं। अभिव्यक्ति-माध्यम वे भाषिक माध्यम होते हैं जो भाषा के अंग होते हैं और शब्दकोशों में दर्ज़ होते हैं, इनके समानार्थी भी हो सकते हैं। शैलीवैज्ञानिक युक्तियाँ किसी भाषिक इकाई के संरचनात्मक या शब्दार्थ को प्रभावी बनाने की दृष्टि से सचेतन और

जानबूझकर किए गए विशिष्ट प्रयोग होते हैं। ये पाठ में पहचान-चिह्न की तरह कार्य करती हैं। इनमें भाव या विचार से सम्बन्धित कुछ अतिरिक्त सूचना भी समाहित होती है। शैली-वैज्ञानिक युक्तियाँ भाषा के प्रयोक्ता की रचनात्मक योग्यता को भी दर्शाती है। ये विलक्षण और वैयक्तिक होती हैं। इनमें बहुत-सी सूचनाएँ होती हैं। इन्हें समझने के लिए पूरा ध्यान देना पड़ता है।

शैली-वैज्ञानिक युक्तियाँ और अभिव्यक्ति-माध्यम दोनों विशिष्ट उक्तियों को अग्रप्रस्तुत करने के माध्यम हैं ताकि उन उक्तियों को अधिक बल प्रदान किया जा सके, प्रमुखता से उभारा जा सके और उनमें अधिक सूचनाओं से भरा जा सके।

5.2.07. शैलीविज्ञान की मुख्य अवधारणाएँ

शैलीविज्ञान के स्वरूप के भलीभाँति समझने के लिए इसकी मुख्य अवधारणाओं का ज्ञान आवश्यक है। आइए, इन अवधारणाओं की चर्चा करें।

5.2.07.1. नॉर्म या प्रतिमान

शैलीविज्ञान का मुख्य प्रयोजन भाषा का विश्लेषण, विशेष रूप से भाषा की रचनात्मकता का विश्लेषण करना होता है। भाषा का विश्लेषण कृति का अर्थ ग्रहण करने, उसे समझने में हमारी बहुत सहायता करता है। शैलीविज्ञान कृति की बाह्य-संरचना का विश्लेषण करते हुए उसके प्रयोजन तथा लक्ष्यार्थ की खोज करता है। यह कृति का वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक अध्ययन करता है। यह अध्ययन कुछ निश्चित प्रतिमानों पर किया जाता है। प्रतिमानों का आधार ग्रहण करने से कृति का विवेचन व्यक्तिनिष्ठ और असंगत होने से बच जाता है। शैलीविज्ञान में प्रयुक्त प्रतिमान भाषिक इकाइयों और व्याकरणिक कोटियों के आधार पर विकसित किए गए हैं।

बहुत से शैली-वैज्ञानिकों के अनुसार कोई भी साहित्यिक रचना अन्ततः एक भाषिक संरचना है। अतः साहित्य और भाषा में कोई तात्त्विक भेद नहीं है। कृति या पाठ की रूपगत विशेषताओं का अध्ययन शैलीविज्ञान की विषय-वस्तु है।

चुने गए तत्त्वों के प्रयोग से 'मानक' या 'प्रतिमान' की अवधारणा का गहरा सम्बन्ध है। प्रतिमान की अवधारणा का मुख्य सम्बन्ध साहित्यिक भाषा से होता है और इसमें एक स्वीकृत मानक का विचार और स्वीकृत मानकों की अस्थिरता का तथ्य भी अन्तर्निहित है। रूसी भाषावैज्ञानिक एल.वी. शेरबा ने लिखा है कि "मानकों के बारे में बात करते समय प्रायः लोग शैलीगत मानकों के बारे में भूल जाते हैं जो कि यदि अधिक नहीं तो अन्य मानकों के बराबर महत्त्वपूर्ण तो हैं ही।" इसका अर्थ यह है कि साहित्यिक भाषा के कोई सार्वभौमिक स्वीकृत मानक नहीं हैं, बल्कि विभिन्न तरह के मानक हैं और ऐसे मानक भी हैं जिन्हें शैलीगत मानक कहा जाता है। यह माना गया है कि वाचिक और लिखित अभिव्यक्तियों के मानकों में अनेक तरह के भेद होते हैं। यह भी, कि साहित्यिक कृति और अन्य अभिव्यक्तियों के मानक अलग-अलग होते हैं।

प्रतिमान को कुछ भाषा वैज्ञानिक एक ऐसा नियंत्रक मानते हैं जो चरों के समूह भिन्नताओं की सीमाओं और स्वीकार्य और अस्वीकार्य चरों को नियंत्रित करता है। ए. ई. डर्बिशायर के शब्दों में "प्रतिमान एक भाषागत अमूर्तिकरण है, भाषावैज्ञानिकों द्वारा सोचा हुआ एक विचार है और इसका अस्तित्व केवल उनके मस्तिष्क में है ... वास्तविक प्रयोग में निश्चित ही प्रतिमान जैसी कोई चीज़ नहीं पाई जाती है। यह ऐसा विचार है जिसे सूत्र के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है, और यह विचार भाषा की शैलीगत विशेषताओं को उसमें से निकाल देने के बाद बची हुई भाषा के बारे में है।" इसका अर्थ यह है कि जिसे शैलीगत विशेषता कहा जाता है वह पहले ही स्थापित प्रतिमान से विचलन है। लेकिन यहाँ यह तथ्य ध्यान देने योग्य है कि प्रतिमान से लगातार विचलन प्रतिमान के चरों के रूप में स्थापित हो जाते हैं क्योंकि वास्तविक शैलीगत विचलन विचलन न होकर भाषा के प्रयोग की प्रतिरूपी और अग्र-प्रस्तुत सामान्य घटना है। अत: कहा जा सकता है कि प्रतिमान विविधता की एकता है। समाज में सदैव भाषा के सम्बन्ध में यह ज्ञान विद्यमान रहता है कि उसका कौनसा रूप सुन्दर-सुगठित है तथा कौनसा रूप कुरूप-अगठित है। प्रतिमान को किसी भाषा में समय-विशेष में परिचालित ध्वनि, शब्द-समूह, रूप-रचना और वाक्य-गठन के प्रतिरूप के अचर या स्थिर रूप में समझा जा सकता है। इन प्रतिरूपों के चर कभी-कभी अचरों से अलग दिशा में चले जाते हैं, लेकिन वे अचरों द्वारा तय सीमा को कभी पार नहीं करते; यदि सीमा का उल्लंघन हो जाए तो वे भ्रामक और अस्वीकार्य हो जाते हैं। साहित्यिक भाषाओं का विकास यह दर्शाता है कि चर हमेशा अचर रूपों की धुरी के चारों ओर घिरे रहते हैं। चर, जैसा कि नाम से प्रकट होता है, कभी भी अचर से इतना अलग नहीं होते कि वे अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता का दावा कर सकें। यह अलग बात है कि वैयक्तिक शैली का अनुमान इसी आधार पर लगाया जाता है कि वह भाषा के प्रतिमान से कितनी अलग है। जी. सेंट्सबरी के अनुसार शैली का असली रहस्य वाक्यांशों, वाक्यों और अनुच्छेदों की संरचना का निर्धारण करने वाले नियमों के उल्लंघन या उपेक्षा में प्रकट होता है।

5.2.07.2. रजिस्टर या प्रयुक्ति

पेशों, सेवाओं, समूहों और विषयों से जुड़ी हुई भाषिक विविधताओं को 'रजिस्टर' या प्रयुक्ति कहा जाता है। उदाहरण के लिए, क़ानून का रजिस्टर चिकित्सा के रजिस्टर से अलग होगा, और चिकित्सा का रजिस्टर शिक्षा से भिन्न होगा। इसे 'उपयोग के अनुसार विविधता' के रूप में समझा जा सकता है। शैलीविज्ञान के विकास में ब्रिटेन के शैली वैज्ञानिक माइकल हैलीडे का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है। 1971 में लिखित 'लिंग्विस्टिक फंक्शन एंड लिट्रेरी स्टाइल : एन इंक्वाइरि इन्टू द लैंग्वेज़ ऑफ विलियम गोल्डिंगज़ द इन्हेरिटर्स' एक आधारभूत निबन्ध है। हैलीडे का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान भाषा और उसके परिवेश को जोड़ने के लिए 'रजिस्टर' शब्द का प्रयोग है। हैलीडे के अनुसार 'रजिस्टर' बोली से अलग होता है। बोली किसी विशेष भौगोलिक स्थान या सामाजिक समूह के विशेष प्रयोक्ता के आदतन भाषिक व्यवहार को दर्शाती है, जबकि 'रजिस्टर' प्रयोगकर्त्ता द्वारा विकल्प निर्धारण को बताता है। विकल्प तीन परिवर्तनीय तत्त्वों पर निर्भर करते हैं – फ़ील्ड या क्षेत्र (प्रतिभागी वास्तव में जिस विषय पर चर्चा करते हैं, वक्ता या लेखक का प्रयोजन अर्थात सम्पूर्ण परिदृश्य जिसमें पाठ क्रियाशील होता है), टेनर या सम्बन्ध (विमर्श में कौन भाग ले रहा है, प्रतिभागियों के सामाजिक सम्बन्ध) और

मोड या प्रकार (जिस माध्यम में संचार हो रहा है वाचिक या लिखित। भाषा किस उपयोग में ली जा रही है, पाठ का प्रकार्य आदि)। भाषाविज्ञान में रजिस्टर भाषा की विविधता का द्योतक है जिसका प्रयोग विशेष वर्ग द्वारा विशेष उद्देश्य के लिए या विशेष सामाजिक संरचना के किए किया जाता है।

5.2.07.3. 'फ़ोरग्राउंडिंग' या अग्रप्रस्तुति

किसी भी कलात्मक संचार में यह एक सामान्य सिद्धान्त है कि कलाकृति किसी न किसी रूप में समाज में प्रचलित उस संचार-माध्यम के प्रतिमानों से विचलित होती है। समाज में यह मान्यता भी होती है कि यदि हम कलाकृति की सार्थकता और उसके मूल्य की परख करना चाहते हैं तो हमें उसके स्वाभाविक प्रतिरूप के स्थान पर रुचिकारक और विस्मयजनक तत्त्वों पर अपना ध्यान केन्द्रित करना होगा। जी. लीच के शब्दों में "भाषा सम्बन्धी या सामाजिक रूप से स्वीकृत प्रतिमानों से यह विचलन 'अग्रप्रस्तुति' कहलाता है, जो पृष्ठभूमि में उभरे हुए चित्र का सादृश्य उपस्थित करता है।"

चित्रकला से सम्बन्धित अंग्रेज़ी शब्द 'फ़ोरग्राउंडिंग' के लिए हिन्दी के भाषा वैज्ञानिकों ने 'अग्रप्रस्तुति' शब्द प्रस्तावित किया है। कुछ विद्वान इसके लिए 'विशिष्टता' शब्द का प्रयोग भी करते हैं। इसका मूल शब्द चेक भाषा का aktualisace है, जिसे प्राग लिंग्विस्टिक सर्कल के मुकारोव्स्की ने प्रस्तावित किया था। अंग्रेज़ी में इसका 'फ़ोरग्राउंडिंग' शब्द के रूप में रूपान्तरण 1960 में पॉल गार्विन ने किया था। आस-पास के चित्रों या शब्दों के मध्य से किसी शब्द या चित्र को उभारना 'अग्रप्रस्तुति' है। यह सामान्य भाषा के प्रतिमानों की पृष्ठभूमि में भाषायी संकेतों के प्रकट होने की घटना है। 'अग्रप्रस्तुति' भाषा के सभी स्तरों और प्रकारों में घटित हो सकती है। सामान्यत: इसका प्रयोग पाठ के महत्त्वपूर्ण अंशों को उभारने, उनमें विशेष अर्थ भरने या उन्हें यादगार बनाने के लिए किया जाता है।

प्राग स्कूल के भाषावैज्ञानिकों ने 'अग्रप्रस्तुति' को काव्यात्मक और ग़ैर-काव्यात्मक भाषा में भेदकारी कारक के रूप में साहित्यिक पाठ को अनपेक्षितता, असाधारणता और विलक्षणता प्रदान करने वाला माना है। जे. मुकारोव्स्की के अनुसार 'अग्रप्रस्तुति' भाषिक घटकों का सौन्दर्यात्मक रूप से साभिप्राय विरूपण है। इसका अर्थ यह है कि 'अग्रप्रस्तुति' साभिप्राय होती है तथा भाषिक घटकों का विरूपण 'अग्रप्रस्तुति' उत्पन्न करता है। मुकारोव्स्की ने बताया है कि 'अग्रप्रस्तुति' दैनिक बोलचाल की आम भाषा में भी हो सकती है जैसे वाचिक विमर्श या पत्रकारिता का गद्य, लेकिन यह अनायास और बिना किसी सुविचारित योजना या संरचना के होता है। साहित्यिक रचनाओं में 'अग्रप्रस्तुति' एक संरचना के तहत प्रयुक्त की जाती है, जिसमें एक व्यवस्था और अधिक्रम होता है। अर्थात् इसमें एक जैसे तत्त्वों जैसे स्वरों के प्रतिरूपों या सम्बन्धित उपमाओं की पुनरावृत्ति हो सकती है, तत्त्वों का एक समूह दूसरे समूह से अधिक प्रभावी हो सकता है। हैलिडे ने प्रभाविता (Dominance) और 'अग्रप्रस्तुति' में भेद करते हुए कहा है कि पाठ की सम्पूर्णता में उसके अर्थ से साभिप्राय जुड़ने पर ही प्रभाविता 'अग्रप्रस्तुत' होती है। वस्तुत: 'अग्रप्रस्तुति' किसी कृति के लिए पुनरावृत्ति, युग्मन, अनपेक्षित शाब्दिक

अन्विति, वाक्य-संरचना में फेर-बदल आदि भाषिक उपकरणों का प्रयोग करते हुए ध्यानाकर्षण उपकरण के रूप में कार्य करती है।

'अग्रप्रस्तुति' स्वचालन की विरोधी अवधारणा है। कोई भी क्रिया जितनी ही स्वचालित होती है वह उतनी ही कम सचेतन रूप से संचालित होती है; वह जितनी अधिक अग्रप्रस्तुत होती है वह उतनी ही अधिक सचेतन होती है। 'अग्रप्रस्तुति' का अर्थ है योजना और व्यवस्था का उल्लंघन। साहित्य सहित सभी कलाओं की तकनीक चीज़ों को 'अपरिचित' बनाना, रूप को कठिन बनाना और अवबोध की कठिनाई व समयावधि बढ़ाना है क्योंकि अवबोध की प्रक्रिया अपने आप में एक सौन्दर्यात्मक लक्ष्य है जिसे सुदीर्घ होना चाहिए।

जी. लीच और एम. एच. शॉर्ट ने दो प्रकार की अग्रप्रस्तुति की पहचान की है : गुणात्मक अग्रप्रस्तुति और संख्यात्मक अग्रप्रस्तुति। गुणात्मक अग्रप्रस्तुति में भाषिक कोड या भाषा के पारम्परिक उपयोग अथवा दोनों के नियमों से विचलन होता है तथा संख्यात्मक अग्रप्रस्तुति में भाषा के कोड से विचलन न होकर भाषिक उक्तियों की अपेक्षित आवृत्ति से विचलन होता है। एक ही विचार या भाव को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न तरीक़ों अर्थात् भाषाई स्तरों में से लेखक या वक्ता अपनी आवश्यकता और पसंद के अनुसार कुछ खास तरीक़ों का चयन करता है। चयन के कई आधार होते हैं, जैसे समतुल्यता, सादृश्य, पर्यायता, विलोमता आदि। जब कोई लेखक लिखता है तब वह निरन्तर भाषिक चयन में डूबा रहता है। भाषा-व्यवस्था के बाहर और भीतर उसके चयन के अनन्तर अग्रप्रस्तुति घटित होती है। अग्रप्रस्तुति के दो मुख्य प्रकार बताए गए हैं – समान्तरता और विचलन। साधारण शब्दों में अनपेक्षित नियमितता को समान्तरता और अनपेक्षित अनियमितता को विचलन कहा जा सकता है। जैसा कि अग्रप्रस्तुति की परिभाषा से स्पष्ट है कि वस्तुत: ये सापेक्ष अवधारणाएँ हैं।

5.2.07.4. विचलन

साहित्यिक रचनाओं के अध्ययन के लिए 'विचलन' की अवधारणा महत्त्वपूर्ण है। यह सभी भाषिक स्तरों पर सक्रिय होता है। शैलीगत रूप में विशिष्ट होने के लिए भाषा के किसी तत्त्व को मानक से विचलित होना होता है। विचलन प्रतिमान के अतिक्रमण से पैदा होता है। जी. लीच कहता है कि यह प्रतिमान सम्पूर्ण भाषा के लिए कार्य करने वाला निरपेक्ष प्रतिमान भी हो सकता है और अध्ययन के लिए उपलब्ध पाठों में तुलनात्मक रूप में उपलब्ध सापेक्ष प्रतिमान भी हो सकता है। मुकारोव्स्की ने दिखाया है कि साहित्यिक प्रोक्ति में विचलन की व्याख्या अकेले में नहीं की जा सकती, बल्कि उसे नियमित और अनियमित दोनों तरह के अन्य भाषिक तत्त्वों के साथ सार्थक प्रतिरूप बनाते हुए एक सम्पूर्णता के निर्माण की दृष्टि से देखा जाना चाहिए।

विचलन को भाषा-व्यवस्था या कोड के साथ-साथ उनके उपस्थित होने के सन्दर्भ की दृष्टि से समझा जाना चाहिए। इसलिए लीच ने साहित्यिक कृति में अग्रप्रस्तुत तत्त्वों की संगति की खोज दो स्तरों पर की है। क्षैतिज स्तर पर यह विचलनों के बीच सम्बद्धता के रूप में तथा लम्बवत् स्तर पर विचलनों के मध्य समनुरूपता के

रूप में अग्रप्रस्तुति होती है। जब विचलन अग्रप्रस्तुति कीसमनुरूपता पैदा करने के लिए आपस में जुड़ते हैं तब वे पाठ का अन्तर-पाठीय प्रतिरूप बनाते हैं।

5.2.07.5. समान्तरता

रचना में किसी एक ही ध्वनि, रूप-रचना, शब्द या वाक्य-गठन का बार-बार प्रयोग समान्तरता कहलाती है। किसी एक या अधिक भाषिक इकाई का आवर्त्तन बार-बार हो कि पाठक का ध्यान रचना के अभीष्ट अर्थ की ओर खिंच जाए। अग्रप्रस्तुति में भाषागत विचलनों की चर्चा में हमनें भाषा-व्यवस्था के भीतर और बाहर लेखक द्वारा किए जाने वाले चयन की बात की थी। लेखक व्यवस्था के नियमों का पालन करते हुए भी जो चयन करता है वह भाषिक उक्तियों की अपेक्षित आवृत्ति से विचलित हो सकता है। भाषिक तत्त्वों का सामान्य से कम या अधिक बार घटित होना एक संख्यात्मक विचलन है क्योंकि उनकी उपस्थिति सामान्य से हटकर है।

समान्तरता भाषा-व्यवस्था में विशेष चयन की इस अत्यधिक अनियमितता का दूसरा रूप है। समान्तरता कृति के चर तत्त्वों की संरचनात्मक पुरावृत्ति है। यह परिवर्त्य स्थितियों को भरने वाले समांतर शब्दों और कथनों के बीच सम्बन्धों के अर्थ को अग्रप्रस्तुत करती है। समानान्तर अभिव्यक्तियों के समानार्थक और विपरीतार्थक अर्थों के सम्बन्धों को व्याकरणिक, स्वानिकी और रूपविज्ञान के तत्त्वों द्वारा मज़बूत किया जा सकता है। समान्तरता समानता के सिद्धान्त पर आधारित होती है। प्रत्येक समान्तरता दो या अधिक तत्त्वों के बीच समानता का सम्बन्ध बना देती है जहाँ सामान्यत: समानताएँ घटित नहीं होती हैं।

5.2.08. पाठ का सारांश

शैली भाषा का विशिष्ट प्रयोग है। शैलीविज्ञान में किसी कृति का विश्लेषण उसकी भाषा के विश्लेषण के आधार पर किया जाता है। शैलीविज्ञान का मुख्य सिद्धान्त यह है कि भाषा का अर्थ भाषायी विविधताओं से प्रकट होता है। इसलिए शैली-वैज्ञानिक यह देखता है कि पाठ या कृति में लेखक ने अपनी अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाने किन भाषिक युक्तियों का प्रयोग किया है और वह इसमें कितना सफल हुआ है। साहित्यिक रचना के मूल्यांकनमें शैलीविज्ञान भाषा के साधारण अर्थ से आगे बढ़कर उसके विशिष्ट अर्थ की खोज करता है। शैली-वैज्ञानिकों ने सामान्य भाषा और साहित्यिक भाषा में अन्तर किया है तथा साहित्यिक रचना के लिए विशिष्ट भाषा को मान्यता दी है। अपने विश्लेषण में वस्तुपरक और रूपवादी होने के बावजूद यह समीक्षा पद्धति भाषिक संरचना के विवेचन के साथ-साथ लेखक के मंतव्यों और कथ्य की सार्थकता का विवेचन भी करती है। यद्यपि कृति-बाह्य मानकों की उपेक्षा के कारण इस पद्धति को समीक्षा की आदर्श पद्धति नहीं माना जा सकता, लेकिन यह सच है कि कृति केन्द्रित होने के कारण यह कृति के आभ्यंतर मूल्यों की पहचान अन्य पद्धतियों की अपेक्षा अधिक सार्थक ढंग से करती है।

5.2.09. उपयोगी सन्दर्भ

5.2.09.1. हिन्दी की पुस्तकें

1. तिवारी, डॉ॰ भोलानाथ. (2009). भाषा विज्ञान. नई दिल्ली. किताब महल. ISBN : 81-225-0007-2

2. नगेन्द्र, डॉ॰ (2005). शैली विज्ञान. नई दिल्ली. नेशनल पब्लिशिंग हाउस. ISBN : 81-214-0412-6

3. शीतांशु, पाण्डेय शशिभूषण. (2004). शैलीविज्ञान और भारतीय काव्यशास्त्र : तुलनात्मक विमर्श. जयपुर. नेशनल पब्लिशिंग हाउस. ISBN : 81-8018-026-3

4. शीतांशु, पाण्डेय शशिभूषण. (2007). शैलीविज्ञान का इतिहास. जयपुर. नेशनल पब्लिशिंग हाउस. ISBN : 81-8018-074-3

5.2.09.2. अंग्रेज़ी पुस्तकें

1. Chapman, Siobhan and Routledge, Christopher (ed.). (2009). Key Ideas in Linguistics and the Philosophy of Language.Edinburgh. Edinburgh University Press. ISBN 978 0 7486 2619 9

2. Bradford, Richard. (2005). Stylistics. New York. Routledge. ISBN-13: 978-0-631-23200-1

5.2.10. अभ्यास के लिए प्रश्न

1. शैली की विभिन्न परिभाषाओं के आधार पर उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. वैयक्तिक शैली की व्याख्या कीजिए।

3. "शैलीविज्ञान भाषाविज्ञान की एक शाखा है"। समझाइए।

4. "शैलीविज्ञान सिद्धान्त न होकर अध्ययन का एक क्षेत्र है"। स्पष्ट कीजिए।

5. रेटॅरिक' या 'वाग्मिता' पर एक टिप्पणी लिखें।

6. अग्रप्रस्तुति की अवधारणा पर प्रकाश डालिए।

7. शैलीविज्ञान में विचलन की अवधारणा का महत्त्व प्रतिपादित कीजिए।

8. "विचलन प्रतिमान के अतिक्रमण से पैदा होता है"। समझाइए।

9. रजिस्टर का शैलीविज्ञान में क्या स्थान है ?

उपयोगी वेबसाइट्स :

01. http://epgp.inflibnet.ac.in/ahl.php?csrno=18
02. http://www.hindisamay.com/
03. http://hindinest.com/
04. http://www.dli.ernet.in/
05. http://www.archive.org

❖❖❖